# भारतीय अमेरिकी लेखिका

## के अमेरिका में रहने और लिखने के बारे में बेबाक विचार

जेरी बांडर: साभार इंदु सुंदरेसन

अपने उपन्यासों में सत्रहवीं सदी के भारत को जीवंत कर देने वाली भारतीय-अमेरिकी लेखिका इंदु सुंदरेसन कहती हैं कि उनकी कहानियां अमेरिका में रहते हुए भी अपने कैशोर्य के देश से ''मजबूत संबंध बनाए रखने'' का एक जरिया हैं। उनकी ख्याति अपने उपन्यासों 'द ट्वन्टिएथ वाइफ' (भारतीय इतिहास की सबसे सशक्त स्त्रियों में से एक मेहरून्निसा के जीवन पर आधारित जो बाद में साम्राज्ञी नूरजहां कहलाईं ) और 'द फीस्ट ऑफ रोजेज' पर टिकी है।

फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले के दौरान उन्होंने 5 अक्टूबर को सिएटल, वाशिंगटन स्थित अपने घर से एक वेब चैट के भागीदारों को बताया, ''भारत में हमारे परिवार के बहुत से सदस्य हैं, बहुत से अन्य अमेरिका में हैं। मैं खुद को ऐसे ही परिभाषित करती हूं- मैं भारतीय हूं और मैं अमेरिकन हूं।''

## वेब चैट के कुछ अंश:

**'द ट्वन्टिएथ वाइफ' में सत्रहवीं सदी के भारत के आपके वर्णन ने मुझे प्रभावित किया है। इसके लिए क्या आपने भारत के इतिहास के इस दौर पर शोध किया था या ये बातें आपको अपने माता-पिता या दादा-दादी से पता चलीं? आपने जिन स्थानों का वर्णन किया है, वे जगहें क्या आज भी भारत में हैं?**

मैंने 'द ट्वन्टिएथ वाइफ' और 'द फीस्ट ऑफ रोजेज' लिखने से पहले और यहां तक कि लिखने के दौरान भी, व्यापक शोध किया। पूरा शोध कार्य यहीं, सिएटल क्षेत्र में, स्थानीय पुस्तकालयों और वाशिंगटन के सुज्जैलो और एलन पुस्तकालयों में हुआ है। इन दो पुस्तकालयों में ही मुझे इतने अनूदित यात्रा विवरण, पांडुलिपियां और संस्मरण मिल गए कि सत्रहवीं सदी के भारतीय चरित्रों के जीवन विवरण गढ़ना आसान हो गया।

जहां तक मेरे माता-पिता या दादा-दादी की सुनाई कहानियों की बात है तो वे सोते समय सुनाई गईं कहानियां थीं और उनके मित्रों और परिचितों के बारे में ही होती थीं। अपने पिता से मैंने कहानी कहने की कला सीखी, इस कौशल का उपयोग मैंने अपने लेखन में किया है।

इन दोनों उपन्यासों में वर्णित ज्यादातर जगहें आज भी मौजूद हैं, और करीब चार सौ साल बाद भी अच्छी-खासी सूरत में हैं। हां, एक जगह पूरी तरह मेरी कल्पना की उपज है: 'द फीस्ट ऑफ रोजेज' में शतरंज की वह विशाल बिसात जिस पर शतरंज में महाबत खां को हराकर मेहरून्निसा अपनी श्रेष्ठता साबित कर देती है। दोनों खिलाड़ियों के मोहरे सचमुच के हाथी, घोड़े, ऊंट और सिपाही हैं। लेकिन यह विचार भी आगरा के पास मौजूद लाल बलुआ पत्थर से बने उजाड़ शहर फतेहपुर सीकरी के एक आंगन के फर्श पर बनी बिसात को देखकर आया।

**क्या अमेरिका आने पर आपको ''सांस्कृतिक झटका'' लगा?**

सांस्कृतिक सदमा लगा भी और नहीं भी लगा। अमेरिका के बारे में मेरी ज्यादातर धारणाओं और विचारों का आधार फिल्में और किताबें थीं। मुझे तो यहां आने के बाद ही पता चला कि उसमें से कुछ चीजें कितनी गलत थीं और कुछ चीजें कितनी ज्यादा सही थीं।

वैसे तो मेरे शुरुआती साल विश्वविद्यालय के कुछ सीमित, सुरक्षित वातावरण में बीते लेकिन आज भी जो बात मुझे सबसे ज्यादा अच्छी लगती है वह यह है कि अमेरिका में आप समाज का अंग होते हुए भी अपनी जातीय और सांस्कृतिक पहचान बनाए रख सकते हैं।

**'द स्प्लैंडर ऑफ सायलेंस' की पृष्ठभूमि द्वितीय विश्वयुद्ध के जमाने का भारत है। क्या इस दौर के बारे में लिखना, सत्रहवीं सदी के भारत के बारे में लिखने से ज्यादा आसान था? मैंने पढ़ा है कि आपके पिता वायुसेना में थे। क्या इससे आपको यह उपन्यास लिखने में मदद मिली?**

कुछ मामलों में स्प्लैंडर लिखना ज्यादा आसान था, खासतौर पर कथानक की पृष्ठभूमि रचने की दृष्टि से। हम किसी पूरी तरह नए या अनजाने संसार की बात नहीं कर रहे

थे।.....और फिर शोध के लिए बहुत अधिक सामग्री उपलब्ध है।

स्प्लैंडर की पृष्ठभूमि मई 1942 के चार दिन हैं। ब्रिटिश शासन से मुक्ति से पहले के कुछ सालों का व्यापक दस्तावेजीकरण हुआ है, इसलिए हुआ यह कि मुझे बस यह तय करना था कि मुझे अपने उपन्यास के लिए क्या चाहिए- मेरे भारतीय चरित्रों के दृष्टिकोण से और मेरे प्रमुख अमेरिकी चरित्र सैम हॉथर्न के दृष्टिकोण से जो अमेरिकी वायुसेना में है और बर्मा को हासिल करने के सिलसिले में भारत आया है।

अब आपके प्रश्न के दूसरे भाग पर आती हूं। मैं वायुसेना के अड्डों पर पली-बढ़ी और छावनियों के जीवन की मुझे खूब याद है- ऑफिसर्स मैस, शाम के छह बजे के बाद पहनी जाने वाली सफेद पोशाकें, एक निश्चित समय के बाद बच्चों का बाहर न दिखना, ऐसी बहुत सी चीजें स्प्लैंडर में आई भी हैं।

**क्या आपको भी ऐसा लगता है कि यह दौर अंग्रेजी में लिख रहे भारतीय लेखकों के लिए खासतौर पर बहुत बढ़िया दौर है?**

हां, अंग्रेजी में भारत से भी और भारत के बाहर से भी, बहुत बढ़िया साहित्य लिखा जा रहा है। मैं कह नहीं सकती कि ऐसा इन्हीं दिनों क्यों हो पाया। मैं पांच साल से 'द ट्वन्टिएथ वाइफ' की पांडुलिपि लिए भटक रही थी- तब जाकर मुझे एक एजेंट मिल पाई और फिर तो सैंडी डिस्ट्रा ने एक ही सप्ताहांत में उपन्यास मेरे प्रकाशक एट्रिया बुक्स को बेच दिया। लेकिन बात यह भी है कि वह सही समय था, किताब पूरी तरह मंज-चमक चुकी थी..... एक ही समय पर कई चीजें एकसाथ हो रही थीं।

मुझे लगता है कि हम (अंग्रेजी में लिख रहे भारतीय लेखक) मुखर हो रहे हैं, हम में से बहुतों के पास कहने को बहुत कुछ है, लोग सुन रहे हैं, बहुत किस्म के स्वर सामने आ रहे हैं- समकालीन भी और (मेरी तरह) ऐतिहासिक भी।

**क्या आप बताएंगी कि आपके देश में लेखकों के विशेष प्रशिक्षण के लिए संस्थान आदि हैं?**

अमेरिका के ज्यादातर विश्वविद्यालयों में रचनात्मक लेखन 'सिखाने वाले' मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स के कार्यक्रम चलते हैं। चार उपन्यास लिखने के बाद मैंने स्थानीय कम्युनिटी कॉलेजों में रात्रिकालीन कक्षाओं में पढ़ाई की।

दो अप्रकाशित उपन्यासों के अलावा 'द ट्वन्टिएथ वाइफ' और 'द फीस्ट ऑफ रोजेज' लिख लेने के बाद मैं लेखन सिखाने वाली कक्षा में गई। इन कक्षाओं ने मुझे अपने काम को दोबारा लिखना और संपादित करना सिखाया। मुझे लगता है कि मैं कुल मिलाकर यह कह रही हूं कि लिखना 'सिखाया' नहीं जा सकता। आप कुछ लिखते हैं, फिर दूसरे उस के बारे में जो कहते हैं, वह सुनकर उसे संपादित करते हैं। लेखन तो आप खुद ही करते हैं।

**आप भारत में पली-बढ़ीं और वहीं आपने अर्थशास्त्र की पढ़ाई की। आप अमेरिका कैसे आईं और लेखिका कैसे बनीं?**

मैंने लेखन को ही कॅरिअर बनाने की बात कभी सोची तो नहीं थी लेकिन यह विचार मेरे मन में कहीं न कहीं छिपा रहा होगा। यूनिवर्सिटी ऑफ डेलावेयर में पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने एक कंप्यूटर खरीदा और एक उपन्यास (फिर एक और उपन्यास, और फिर 'द ट्वन्टिएथ वाइफ') लिख डाला..... मेरे मन में ऐसा कोई संदेह तक नहीं था कि मैं यह नहीं कर पाऊंगी। एक सरल आस्था और आत्मविश्वास ही मेरा संबल थे।

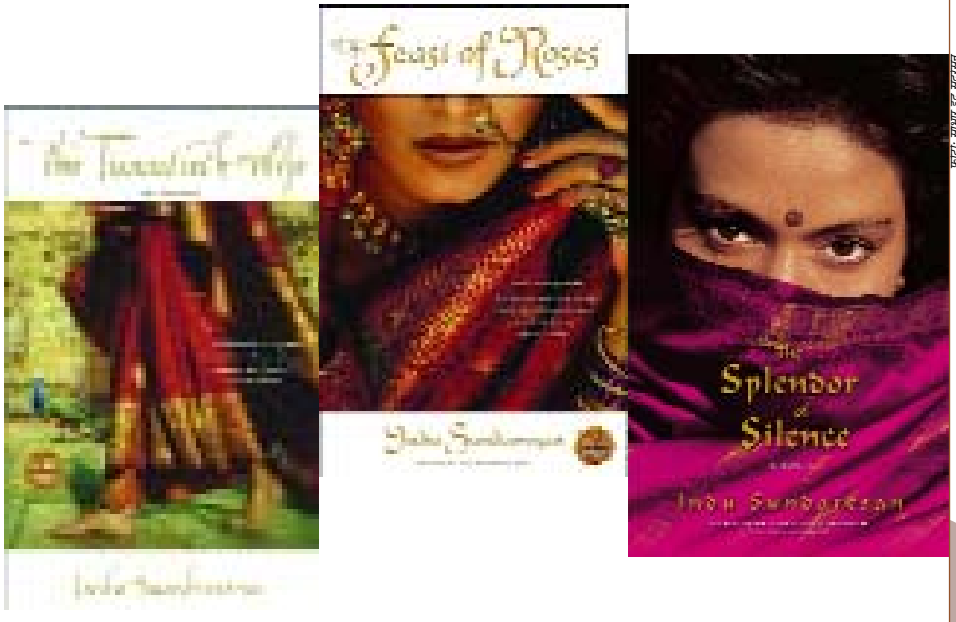


फोटो: साभार इंदु सुंदरेसन

**आपके प्रिय भारतीय लेखक कौनसे हैं और वह कौन सा तत्व है जो उनके साहित्य की ओर आपको आकर्षित करता है?**

मुझे बहुत से लेखक प्रिय हैं। ज्यादातर उनकी विशिष्ट रचनाओं के कारण प्रिय हैं। चित्रा दिवाकरूणी की भाषा की काव्यात्मकता, अमिताभ घोष की वातावरण रचना, आर. के. नारायण की वातावरण रचना और भाषा मुझे बहुत प्रभावित करते हैं। रूथ प्रावर झाबवाला को अपने चरित्रों पर पकड़ के लिए पसंद करती हूं।

**आपकी नायिका मेहरून्निसा कैसी स्त्री है? उसके बारे में कुछ बताएं।**

34 साल की मेहरून्निसा एक बेटी की मां, विधवा थी। आकर्षक स्त्री मानी जाने की उम्र कब की पीछे छूट चुकी थी। तब वह सम्राट जहांगीर की बीसवीं पत्नी बन कर उसके हरम में आई।

अगले सत्रह वर्षों में यह स्त्री सब से सशक्त मुगल साम्राज्ञी साबित हुई। वह दरबार में बैठती (भले ही पर्दे में), फैसले देती, फरमानों पर दस्तखत करती, उसकी अपनी मुहर थी। उसके नाम के सिक्के ढले (मुगल सम्राटों के नाम के सिक्कों में उनकी पत्नियों का जक्र नहीं होता था)- बस उसके नाम का खुत्बा ही कभी न पढ़ा गया। मस्जिदों के मुअज्जिन जहांगीर को सम्राट और मुल्क का शासक घोषित करते रहे।

उसकी ये उपलब्धियां एक भरेपूरे हरम के अंदर रहते थीं। वहां बहुत सी स्त्रियां थी, सत्ता और शक्ति का जमाजमाया पदक्रम था। मेहरून्निसा इस पदक्रम को लांघकर शाही हरम के अलावा दरबार में भी शीर्ष पर पहुंची और ब्रिटेन के सम्राट जेम्स प्रथम के पहले अधिकारिक राजदूत और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शुरूआती प्रतिनिधि सर टॉमस रो से भी निपटीं।

मैं उसके बारे में बहुत कुछ बता सकती हूं लेकिन आपको ज्यादा जानने के लिए 'द ट्वंटिएथ वाइफ' और 'द फीस्ट ऑफ रोजेज' पढ़नी चाहिएं।